PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL 1, ISSUE 4

कमल कुमार के कथा–साहित्य में नारी समस्याएँ

शोध निर्देशक,
प्रा. डॉ. व्ही. एन. भालेराव
हिंदी विभाग,
सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय,
पुणे। **महाराष्ट्र भारत**

शोध कर्ता,
प्रा. सौ. सूर्यवंशी एस. आर.
हिंदी विभागाध्यक्ष,
श्रीपतराव कदम महाविद्यालय,
शिरवल। **महाराष्ट्र भारत**

नारी चेतना की संवाहिका कमल कुमार सिर्फ नारी जीवन की चितेरे ही नहीं तो उसकी पक्षधर भी है, इसीलिए नारी जीवन में होनेवाली विविध समस्याओं को चित्रित कर नारी को कितनी भयावह स्थितियों से गुजरना पड़ता है यह लेखिका ने अपने कथा–साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत किया है। समस्याएँ अधिकांशतः सामाजिक क्षेत्र में जन्म लेती है और उसका संबंध अधिकतर नारी जाति से होता है। विविध समस्याओं और कुप्रथाओं ने नारी जाति को बड़ी हीनावस्था में पहुँचा दिया है। विवाह पूर्व और विवाह बाह्य संबंध, बलात्कार की समस्या, परित्याक्ता, अनमेल विवाह, विधवा विवाह, स्त्री भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, प्रौढ़कुमारी, समलैंगिक संबंध की समस्या, व्यसनाधीन पति की समस्या आदि समस्याओं से नारी पीड़ित है। पुरुष के जीवन पर उन समस्याओं का और उनसे निर्मित पीड़ा का उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना नारी पर। नारी की समाज में दयनीय स्थिति का कारण जहाँ उसका स्त्री होना है, वहाँ इन समस्याओं के अभिशापों से पीड़ित होना भी है। कमल कुमार के कथा–साहित्य में चित्रित नारी जीवन की विविध समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

विवाह पूर्व और विवाह बाह्य संबंध :

सृष्टी का चक्र स्त्री और पुरुष पर ही चल रहा है। दोनों भी अपने आप में पूर्ण होते हुए भी अपूर्ण ही हैं। पूर्ण बनने के लिए उन्हें एक–दूसरे की अत्यंत आवश्यकता होती है। स्वातंत्र्योत्तर काल में नारी की प्रेम संबंधी दृष्टि में परिवर्तन हुआ है। उसके प्रेम संबंधों में अधिक स्वतंत्रता एवं स्वच्छंदता आयी है। वह सामाजिक क्षेत्र में आने से पुरुष के साथ उसके संबंध भी अधिक स्वतंत्र हुए और उसकी नैतिकता संबंधी मान्यताएँ भी बदली हैं। नए युग की रोशनी में आज की नारी पुरुष के समान स्तर पर जाकर प्रेम के परंपरागत मूल्यों को बदलना चाहती है। वह व्यक्ति रूप में जीना चाहती है। साधन बनना उसे मंजूर नहीं है। 'मुझे माफ करो' कहानी की 'मंजू' शादी के पहले प्रेमी से समर्पित होकर गर्भवती रहती है। प्रेम करने और समर्पित होने में उसे कोई पाप या डर नहीं लगता। जब माता–पिता को पता चलता है तब घर में बड़ा हंगामा होता है तो भी वह शांत रहकर माफी माँगती है। जब प्रेमी शादी के लिए मना कर देता है। तब भी वह बिना विलचित हुए गर्भपात करती है। वह समाज या परिवारवालों से डरती नहीं और न ही प्रेमी के सामने गिड़गिड़ाती है, न आत्महत्या करती है। लेकिन उसके घरवालों के लिए उसका विवाहपूर्व संबंध और गर्भवती होना एक भयावह समस्या बन जाती है।

दैहिक स्वच्छंदता के परिणाम स्वरूप बदलते मूल्यों को अभिव्यक्त करना कमल कुमार का प्रमुख उद्‌देश्य रहा है।

'मंडी' कहानी की 'वह' नौकरीसुधा है लेकिन भौतिक सुख–साधनों की लत और ऐशो–आराम की पूर्ति के लिए वह के अधेड़ आयु के बॉस से संबंध प्रस्थापित करती है। उसमें उसे अपराध नहीं लगता बॉस के बेढ़ब शरीर से उसे घृणा आती है लेकिन गाड़ी, बंगला और पदोन्नति के लिए वह उससे संबंध बनाए रखती है। 'वह' की तरह बिना काम करते ऐशो–आराम से जीवन जीने के लिए अनेक युवतियाँ स्वतंत्रता के नाम पर स्वैराचार करती हुई मंड़ी की बिकने की वस्तु कब बन जाती है, उसे भी पता नहीं चलता। ऐसी नारियाँ समाज व्यवस्था के लिए समस्या बनती है। 'पूर्ण विराम' कहानी की नायिका 'नुजहत' मुस्लिम होते हुए भी वह हिंदू अजय से प्यार करती एक बच्चे को जन्म देती है। लेखिका ने यहाँ स्पष्ट किया है कि अगर नारी को पुरुष से आत्मीयता और सच्चा प्यार मिले तो उसके लिए वह मृत्यु को भी अपना सकती है। आज की स्त्री अविवाहित मातृत्व की स्थिति को भी सहज रूप से स्वीकार कर रही है। इस स्थिति के प्रति उनमें अपराध बोध का भाव नहीं दिखाई देता।

'पहचान' कहानी की 'मीनू' अविवाहित है। पर्स में निरोध के पैकेट रखती है। पूँछने पर कहती है– ''घबराओं नहीं अब बालिग हूँ मैं। यह मेरी पर्सनल जरूरत है।'' उसने एक बच्चे को जन्म दिया है। वह कहती है– ''हमने शादी ही नहीं की जरूरत ही महसूस नहीं हुई।'' अविवाहित माता बनकर भी किसी हीन मनोग्रंथी से वह पीड़ित नहीं है। मीना की यह जीवन प्रणाली नारीवादी विचारधारा का ही प्रभाव है। अवैध संबंध आज के सभ्य समाज की एक फैशन बन गयी है। यौन संबंधों को लेकर आज विचार बदल रहे हैं। नैतिकता के लिए जो दोहरा मापदंड है। उसके संबंध में शिक्षित स्त्रियों का दृ ष्टिकोन बहुत बदल गया है और अधिक से अधिक स्त्रियाँ इस दोहरे मापदंड को आपत्तिजनक मानने लगी है। शादी से पहले सेक्स संबंध अथवा विवाहोत्तर सेक्स संबंध के कारण पुरुष को भी उतना ही हीन मानना चाहिए जितना स्त्रियों को माना जाता है। ऐसी मांग करनेवाली स्त्रियों की संख्या बढ़ती जा रही है। शिक्षित नवयुवतियाँ तो यहाँ तक की कहने लगी है कि यदि पुरुष शादी से पूर्व या विवाहोत्तर सेक्स संबंध स्थापित कर सकता है तो स्त्रियाँ भी ऐसा क्यों नहीं कर सकती।

'मैं घूमर नाचूं' उपन्यास की 'कृष्णा' प्यार और वैवाहिक सुख से पति द्‌वारा वंचित संवेदनशील आयुष की आत्मीयता और संवेदना से उसके प्रति समर्पित होकर गर्भवती होती है। उसका उसे अपराध बोध नहीं तो भाव बोध लगता है। वह कहती है, ''आयुष ने प्रेम के सोंधेपन से मेरी औरत को जगाया, दुलराया, बहलाया उसमें नए प्राण फूँकें। यह ताजी हवा का झोंका था। जंगल में खिले फूल की सुगंध थीं। बादलों में बने इंद्रधनुष्य की तरह था। ठिठुरती सर्दी में ताप देती धूप सा।'' उसका मानना है कि पवित्रता का संबंध शरीर से नहीं मन से होता है। इसी कारण ऐसे संबंध न अनुचित है न अनैतिक है। इसी उपन्यास की 'जरीना' पति द्‌वारा प्रताड़ित तथा उपेक्षित परित्यक्ता है। वह फाईन आर्ट में पोस्ट ग्रॅज्युएट है। जरीना हिंदू धर्म के संजय की आत्मीयता, अपनापन और निस्वार्थ सहयोग के कारण मोहित होकर उसके प्रति समर्पित होती है तथा उसके साथ बिना शादी के रहने में उसे कोई आपत्ती नहीं है।

कमल कुमार ने अपने कथा–साहित्य में संक्रमण शील समाज में हो रहे मूल्य विघटन की प्रक्रिया से संबंधों में आये बिखराव और संबंधों को ठोस धरातल पर स्थापित करने की कठिनाईयों को विविध पहलुओं से अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

बलात्कार पीडित नारी की समस्या :

नारी के मर्जी के विरूद्ध उससे समागम करना बलात्कार कहलाता है।बलात्कार नारी पर होनेवाला भयावह आघात है। बलात्कार करनेवालों को भले ही क्रूरता में आनंद प्राप्त हो परंतु जिस नारी पर यह बीतता है। वह तो जिंदगी भर इस कार्य से नफरत कर बैठती है। उसकी संवेदना के सारे स्त्रोत सूख जाते हैं। वह न जीवित रह सकती है न मर सकती है। अनेक बार ऐसी नारियाँ आत्महत्या भी कर लेती हैं। जो जीवित रहती हैं उन्हें सहज–स्वाभाविक जीवन जीने में बाधा निर्माण होती है। उनका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता हैं। नारी शोषण का यह एक अत्यंत भयावह और घिनौना रूप है। कमल कुमार ने इस समस्या को गंभीरता से अपनी कृतियों द्वारा अभिव्यक्त किया है और इसे अमानवीय एवं पशु से भी बदतर माना है।

'पूल' कहानी की नायिका 'सविता' पर बचपन में अपने पिता द्वारा अनेक बार अत्याचार होता है। जैसे–जैसे उसकी उम्र बढ़ती गई। वह भयावह हादसा भूलने की जगह उसके मन में कुंठा बनकर पनपता है। शादी के बाद पति के साथ में भी वह अपने को उसी स्थिति में पाती है। लेकिन अपनी आंतरिक पीड़ा को पति के साथ बाँटने का साहस नहीं करती। बलात्कार से निर्मित मानसिकता का लेखिका ने यथार्थ चित्रण किया है। बलात्कार पीड़ित नारी को शोषित अवस्था में ही अपना जीवन व्यतित करना पड़ता है। 'समयबोध' कहानी की बच्ची 'गौरी' विधवा माँ की गृहस्थी में सहायक बनने के लिए शहर के सधन घर में काम करने भेजी जाती है। काम करते पढ़ाई के साथ विविध कोर्स करते वह अपना अस्तित्व निर्माण करती है। लेकिन यौवनावस्था में मालिक के वासना का शिकार बन जाती है। बार–बार आत्याचारित गौरी गर्भवती होती है। मालकिन पत्नी उसे बेहद पिटकर घर से निकाल देती है। बलात्कार के कारण उसका पूरा जीवन ही बरबाद होता है जो उसे वेश्याओं के गली में ले जाता है। नारी मुक्ति, संरक्षण और आरक्षण की दुहाई देनेवाले तमाम बुद्धिजीवी चर्चा और विमर्श तक सीमित रहे हैं। क्योंकि स्त्रियों पर हो रहे बलात्कार के खिलाफ कोई कठोर कानून नहीं बन है।

समलैगिंक संबंध की समस्या :

आज समलैगिंक संबंध यह एक समस्या बनती जा रही है। वैसे भारतीय समाज जीवन में समलैगिंक संबंध को मान्यता नहीं है। तो भी समलिंगीक संबंध दिखाई देते हैं। कमल कुमार ने समलैगिंक संबंध को गंभीरता से लिया है। 'सखियाँ' कहानी की संतोषी और शीला दोनों सखियाँ अपने–अपने पति द्वारा शारीरिक और मानसिक सुख से वंचित है और उनकी माँग पर उपेक्षित और प्रताड़ित दोनों के पति विवाह बाह्य संबंधों से ग्रस्त होने के कारण वे अपना 'स्व' सुख एक–दूसरे में ढूँढ़ती है। उन्हें अपने आचरण अथवा ऐसे संबंधों से कोई अपराध बोध नहीं है। पति के जीवन में दूसरी स्त्री आने के कारण उनके जीवन में यह समस्या बन जाती है। यह स्थिति समाज में स्त्रियों के संग

आम नहीं हो सकती, किंतु फिर भी जिस किसी के बीच हो वह भी एक वास्तविकता तो है ही। अपने ऐसे संबंधों को ईमानदारी तथा साहस के साथ स्वीकार करना ही नारी जीवन का एक नया पक्ष उद्घाटित करता है। वह अपने दुगने बड़े लड़के–लड़कियों की नाबालिग माँ बन जाती है।

परित्याक्ता नारी की समस्या :

परित्याक्ता नारी जीवन का एक घिनौंना रूप है। परित्याक्ता की कल्पना वैसे अत्यंत प्राचीन काल से भारत में है। यह स्थिति पुरूष के लिए उतनी पीड़ा दायक नहीं है जितनी स्त्री के लिए होती है। समाज उसे शक की दृष्टि से देखता है। नारी सांस्कृतिक रूढ़ियों और परंपराओं के कारण अपना जीवन नए रूप में प्रारंभ नहीं करती थीं।

पर आज परित्याक्ता पुनर्विवाह कर सकती है और वह भविष्य में अपने मन के अनुसार जीवन जी सकती है। वह करूणा की वस्तु नहीं है वह नारी जागृति की एक विशिष्ट अर्थपूर्ण उपलब्धि है। परित्याक्ता कोई पीड़ित अवस्था नहीं बल्कि विवाह से निर्माण पीड़ित अवस्था को दूर करने का उपाय है।

कमल कुमार ने अपने कथा–साहित्य में नारी की परित्याक्ता समस्या को भी वाणी दी है। 'गुड मॉर्निंग मिस' कहानी की 'अलका' पति के आत्याचारों से प्रताड़ित अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए उसे त्यागकर अनेक समस्याओं से संघर्ष करती नौकरी कर आत्मनिर्भर बनकर अपने लिए जीने की नई राह ढूँढ़ती है। 'विस्थापित' कहानी की नायिका नीरजा सुशिक्षित शोधछात्रा है। अनपढ़ पति संशय के कारण उसे जानवर की तरह पीटता है। पति को छोड़कर वह आत्मनिर्भर बनने के लिए, आत्मसम्मान से जीने के लिए, अपने गाईड के पास आती है। लेकिन वे उसकी परिस्थिति का फायदा उठाकर उसका शोषण करते हैं और उसका जीवन नरक बन जाता है।

अनमेल विवाह की समस्या :

अनमेल विवाह नारी दासता और शोषण का एक और रूप प्रकट करता है। यह एक भयानक सामाजिक कुरीति है। नारी समाज में शताब्दियों से पारतंत्रता में रही है। इसलिए अनमेल विवाह का शिकार भी वही होती है। अनमेल विवाह में किशोरी लड़कियों का विवाह वृद्ध पुरुषों से कर दिया जाता है। आयु के साथ विचारों तथा आचारों में अनमेलता हो तो भी जीवन बेमेल हो जाता है।

कमल कुमार ने अनमेल विवाह की समस्या को अपने कथा–साहित्य द्वारा प्रमुख रूप से उठाया है। 'फॉसिल' कहानी की मिस गार्गी सिंह और उसके पति में आयु, शिक्षा, विचार, आचरण, आर्थिकता आदि में बहुत बड़ा अंतर होने के कारण एक बुध्दिमान शोध छात्रा का जीवन नरक बन जाता है। जब अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान के प्रति वह जागृत होती है। तब वह पति, बच्चे त्यागकर अपनी अस्मिता और अपने मूल्यों को बचा लेती है।

नारी को स्वावलंबी बनने के लिए विवश होना पड़ता है। यह कमल कुमार ने 'कैटलिस्ट' कहानी द्वारा स्पष्ट किया है। कहानी की नायिका मिस सिंह का विवाह उसके दुगने आयु के व्यक्ति से होता

है। वह अपने दुगने उम्र के पति की दहशत और अश्लील हरकतों से गौना के लिए मायके आयी वापस ससूराल नहीं जाती। वह पढ़–लिखकर अपना अस्तित्व तो बनाती है लेकिन जीवनभर अनेक समस्याओं से संघर्ष करती रहती है। शादी के दो दिन बाद पीहर आई वह वापस ससुराल नहीं जाती। सौतेली माँ द्वारा उपेक्षित, पीड़ित जीवन जीते वह शिक्षा प्राप्त कर सरकारी महाविद्यालय में प्राध्यापक बनकर अपना अस्तित्व निर्माण करती है। तो भी आयु की अनमेलताने उसका जीवन ही उजाड़ दिया है।

'आवर्तन' उपन्यास की नायिका 'पार्वती' और प्रा.अमर के जीवन की भी यहीं कहानी है। जीवन के प्रति देखने का दृष्टिकोन दोनों का अलग–अलग हैं। अनपढ़, देहाती बोली बोलनेवाली पार्वती नैतिक मूल्यों को लेकर जीनेवाली है। लेकिन अंह से ग्रस्त पति अमर से उसे उपेक्षा के बिना कुछ नहीं मिला। उपेक्षा और प्रताड़ना से वह जीवनभर पीड़ित रहती है।

इससे स्पष्ट होता है कि अनमेल विवाह स्त्री के लिए एक अभिशाप रहा है। यह कहना गलत न होगा की इसने समाज में व्याप्त कुरीतियों और आर्थिक कारणों के चलते बीभत्स रूप धारण किया है। जो समाज, परिवार, संस्कृति के लिए घातक है।

विधवा विवाह की समस्या :

'विधवा समस्या' इस प्रथा ने नारी के अमानुषिक शोषण के साथ कई सामाजिक और नैतिक समस्याओं को जन्म दिया है। यह नारी जीवन की ऐसी विडंबना है, जो निर्दोष नारी को अनेक दोषों का मूल बना देती है। हिंदू समाज में विधवा का दोहरा शोषण होता है। एक ओर वह समस्त मानवीय अधिकारों से वंचित कर दी जाती है और दूसरी ओर उसके चरित्र की नाप–जोख इतनी सूक्ष्म और पैनी दृष्टी से की जाती है मानो हिंदू धर्म का संपूर्ण अस्तित्व ही उसके सद्चरित्र रहने पर टिका है।

कमल कुमार ने भी विधवा विवाह को लेकर नारी जीवन की भयावह समस्याओं को अपने कथा–साहित्य द्वारा अभिव्यक्ति दी है। उनके 'धारावी' कहानी की नायिका 'धारावी' कंपनी में बड़े पद पर व्यवस्थापक है। देश–विदेश में कामकाज के कारण जाती है। लेकिन दुर्भाग्य यह कि वह नीच जाति की विधवा है। वह उच्चवर्गीय आकाश से प्रेम करती है। उससे शादी करना चाहती है। लेकिन आकाश के रईस और दिकायानूसी विचारोंवाले पिता को यह मान्य नहीं हैं। फिर भी दोनों बिना शादी के स्वयं को शादीशुदा मानकर रहते हैं। धारावी को आकाश से एक बच्ची होती है। धारावी आए दिन विवाह के लिए उसके पीछे पड़ती है। लेकिन आकाश हर दिन शादी करेंगे कहता हुआ आगे चलता है। पिता बेटे पर भी जानलेवा हमला करते हैं। लेकिन बेटा धारावी को छोड़ता नहीं। फिर आकाश के पिता धारावी को कहते हैं, ''वेश्या कहीं नीच जात! कोठे छोडकर इज्जत वाले घरों– मोहल्ले में आ गई हो।'' ऐसा कहते हुए उसे गुंडों द्वारा मरवाते हैं। एक विधवा के प्यार करने के प्रति होनेवाली बर्बस धारणा हजारों बरसों से समाज में आज भी मौजूद है। विधवा दुबारा न प्यार कर सकती है न घर बसा सकती है। तो वह पति के साथ सति हो जाय या वेश्यालय या कोठी सजाए उसे इज्जतदार समाज में स्थान नहीं है।

'के नाम है थारों' कहानी की नायिका 'स्वांगी' देहाती अनपढ़ नारी है। पति के मृत्यू के बाद नाबालिग स्वांगी को उसके मृत्यु का कारण मानकर सास द्वारा पीटा जाता है। दासी की तरह उससे प्रातः काल से देर रात तक काम करवा लिया जाता है। परिवार और समाज द्वारा उसका शोषण किया जाता है। तो भी वह जीना चाहती है, दूसरा विवाह करना चाहती है। लेकिन कोई भी उसके मन की भावना को नहीं समझता। 'मैं घूमर नाचू' उपन्यास की विधवा उर्मिला बुआ और मीनू दोनों भी विधवा है। उनकी यौवनावस्था में दुबारा शादी करना तो दूर उर्मिला बुआ जमीन–जायदाद में हिस्सेदार न हो इसलिए उसे नशिली दवा देकर सती जाने के लिए मजबूर किया जाता है। लेकिन बड़े भाई के समय पर पहुँचने के कारण वह बचती है।

आज विधवाओं का जीवन उतना बेहाल नहीं है जितना पहले था। लेकिन उतनी भी अच्छी नहीं है जितनी चाहिए थीं। आज भी समाज और परिवार में उसका वही स्थान है। किसी भी समस्या का हल केवल विचार या परिवर्तन द्वारा तब तक नहीं हो सकता जब तक व्यवहारिक जीवन में आचरण द्वारा वह नहीं लिया जाता। यही कमल कुमार यहाँ स्पष्ट करना चाहती है।

स्त्री भ्रूण हत्या की समस्या :

भारतीय समाज में विभिन्न प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के बाद भी लड़के और लड़की के जन्म को लेकर एक अलग ही मानसिकता दिखाई देती है। बरसों से चली आई मानसिकता लड़की को पराया धन और लड़के को वंश का दिया मानती है। नारी स्वयं उससे अपने आप को मुक्त नहीं कर पायी हैं। पुत्र के जन्म को लेकर घर–परिवार में अत्यानंद होता है। माँ को तो स्वर्ग छूता हुआ दिखाई देता है। वह अपने मातृत्व को सार्थक मानकर उस पर गर्व महसूस करती है। तो लड़की के जन्मपर स्वयं को किसी भयावह अपराध के कटघरे में खड़ी कर बहुत उदास और खिन्न होती है। वह यह भूल जाती है अगर उसके माँ ने उसे नष्ट किया होता या उसके जन्मपर दुःखी होती तो वह आगे माँ बनती क्या ? अनेक जगह स्त्री भ्रूण हत्या के लिए स्त्री ही ज्यादा कारण बनती है। यह नारी जाति का बहुत बड़ा दुर्भाग्य है।

कमल कुमार ने अपने कथा–साहित्य द्वारा स्त्री भ्रूण हत्या से होने वाले दुष्परिणामों को वाणी दी है। उनकी 'अतंर्यात्रा' कहानी की नायिका 'सविता' को पहली बेटी है। दूसरी बार वह गर्भवती होती है। पति, घरवाले इस बार बेटा चाहते हैं। इसलिए उसके विरोध के बाद भी भ्रूण परीक्षण करते हैं। परीक्षण में लड़की का भ्रूण पाया जाता है। तब वे सविता को बलपूर्वक जबरदस्ती से भ्रूण हत्या करने के लिए तैयार करते हैं। वह पति को बहुत समझाती हैं। बच्ची के जान के लिए उसके सामने गिड़गिड़ाती है तब सास कहती है, ''बस–बस! ज्यादा नाटक करने की जरूरत नहीं। सोचने–समझने को क्या रखा है इसमें। एक लड़की है तो। काफी नहीं क्या?... अब क्या यहाँ लड़कियों की लाइन लगाएगी। ये तो जिस घर के पीछे पड़ जाएँ सात पुश्तों तक पीछा नहीं छोड़ती।'' ऐसी मानसिकता की नारीयों के कारण सिर्फ बाहर ही नहीं तो पेट में भी स्त्री भ्रूणों का जीना मुश्कील हो गया है।

दहेज प्रथा की समस्या :

भारतीय परिवेश में विवाह में दहेज प्रथा का प्रचलन जीवन की एक विडंबना है। इस प्रथा ने मध्यमवर्गीय समाजिक व्यवस्था को खोखला बना दिया है। लड़की शिक्षित हो या अशिक्षित आज दहेज बिना उसका विवाह असंभव हो गया है। दहेज प्रथा विकराल महामारी बनकर समाज में चिरकाल से व्याप्त है। इस शोषण से उत्पन्न नारी की यातना का चित्रण कमल कुमार ने अपने साहित्य में किया है। माता–पिता की आर्थिक कठिनाई एवं दहेज के अभाव में नारी के संग होनेवाले अमानुषिक अत्याचारों का मार्मिक चित्रण अधिक दिखाई देता है। 'पिकनिक' कहानी की 'सुधा' का जीवन दहेज के अभाव में यातनाओं से भर जाता है। वही हाल 'विस्थापित' कहानी की नायिका नीरजा का है। दहेज प्रथा उनके जीवन में अनेक समस्याएँ, उपेक्षा, प्रताड़ना निर्माण करती है।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि, समय चाहे प्राचीन काल का हो या आधुनिक या उत्तर आधुनिकता का हो। नारी जीवन की त्रासदी सदियों से जरा भी कम नहीं हो पायी है।

संदर्भ ग्रंथ :

01. मुझे माफ करदो – कमल कुमार,
02. मंडी – कमल कुमार,
03. पहचान – कमल कुमार,
04. मैं घूमर नाचूं – कमल कुमार,
05. पूल – कमल कुमार,
06. समयबोध – कमल कुमार,
07. सखियाँ – कमल कुमार,
08. गुडमॉर्निंग मिस – कमल कुमार,
09. फ्रीलांसर – शुभा वर्मा,
10. कैटलिस्ट – कमल कुमार,
11. आवर्तन – कमल कुमार,
12. धारावी – कमल कुमार,
13. के नाम है थारो – कमल कुमार,
14. अंतर्यात्रा – कमल कुमार,
15. पिकनिक – कमल कुमार,